400
Н

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1230/10/91
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 400

(R) 1911

❋ वन्देमातरम् ❋

गांधी गीतसागर

संग्रहकर्ता और प्रकाशकः—

लाला बाबूलाल बुकसेलर,

मन्दिर प्रयागनारायण—कानपुर।

प्रथमबार ८०००] सन् १९३० ई० [मूल्य -)॥

इस पुस्तक का सर्वाधिकार प्रकाशक ने स्वाधीन रक्खा है।

891.431
B119G

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 400
Date 9.1.2.71
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
30 MAR. 1931
DEPARTMENT

❁ बन्देमातरम् ❁

❁ गांधी गीतसागर ❁

—— :❁: ——

ग़ज़ल।

भारत में डंका आज़ादी का बजवा दिया गांधी बाबा ने।
सत्याग्रह झण्डा दुनियां में फहरा दिया गांधी बाबा ने॥ १॥
सर पर गठरी थी गुलामी की अति दूर थी हम से आज़ादी।
बनकर प्रहलाद हमें सत् पथ दिखला दिया गांधीबाबा ने॥२॥
घुस गये विदेशी घर में थे सब माल लूट कर ले जाते।
सद शुक्र हाथ सोतों का पकड़ बिठला दिया गांधी बाबा ने॥३॥
पैंसठ करोड़ धन जाता था प्रति वर्ष बिदेशी कपड़ों से।
तब मन्त्र बिदेशी बहिष्कार सिखला दिया गांधी बाबा ने॥४॥
दे ज्ञान हमें चर्खें का पुनि खद्दर का बाना पहना कर।
दिल गोरे चमड़े वालों का दहला दिया गाँधी बाबा ने॥ ५॥
निश्चय ही दिवाला निकलेगा मैन्चेस्टर लङ्का शायर का।
गर उस पथपर हम चलेंसभी जो बता दिया गांधीबाबा ने॥ ६॥
टूटा कानून नमक का ज्यों यों ही प्रसिद्ध सब टूटैंगे।
है भद्र अवज्ञा का पथ अब दर्शा दिया गाँधी बाबा ने॥ ७॥

सत्याग्रह करके नवयुवको भारत माँ को आज़ाद करो
बस यही विजयका मार्ग हमें बतला दिया गाँधी बाबा ने॥ ८

गज़ल।

भारत! मैं तेरे नाम का डंका बजाऊंगा।
संसार का सिर मौर तुझे फिर बनाऊंगा॥
रहने न दूंगा माँ की गुलामी की बेड़ियाँ।
आज़ाद बनाऊंगा तभी चैन पाऊंगा॥
ज़ालिम पुलिस गर हमपै चलाएगी लाठियाँ।
तो शौक से मैं सामने सीना अड़ाऊंगा॥
हिंसा को स्वप्न में भी न लाऊंगा हृदय में।
खंजर से सितमगर के मैं बोटी कटाऊंगा॥
बौछार गोलियों की या तेगों की मार हो।
माता के लिये शीश मैं अपना चढ़ाऊंगा॥
घर घर में चला चर्खा बना करके सूत को।
लाखों करोड़ों थान मैं खादी बनाऊंगा॥
कपड़े विदेशी मुल्क में बिकने न दूंगा मैं॥
खादी से देश-भाइयों के तन सजाऊंगा॥
मैंचेस्टर लंकाशायर ने लूटा है देश को।
अब ताले चढ़ा उनकी मिलों को रुलाऊंगा॥
गाँजे, शराब, ताड़ियों की जा दुकानों पर।
कर जोड़ भाइयों से नशों को छुड़ाऊंगा॥

जिन ज़ालिमों ने देश को बरबाद किया है।
उनके किये का फल बुरा उनको चखाऊंगा ॥
अबतक जो लुटा मालोज़र वह कम है कुछ नहीं।
लुटने न दूंगा देश की दौलत बचाऊंगा।
ऐ 'भीम' न कर सोच ये मोहन ने कहा है।
'स्वाधीन मातृभूमि मैं अपनी बनाऊंगा' ॥

ग़ज़ल।

सितमगर की हस्ती मिटानी पड़ेगी।
हमें अपनी गर्दन झुकानी पड़ेगी ॥
कभी उफ़ न लायेंगे अपनी ज़ुबां पर।
मुसीबत सभी कुछ उठानी पड़ेगी ॥
बहुत हो चुका अब रहें हम कहाँ तक।
ये बेईमानी सारी हटानी पड़ेगी ॥
विदेशी बसन औ नशे की जिनिस पर।
हमें अब पिकेटिंग करानी पड़ेगी ॥
नमक को बनाकर औ कर बन्द करके।
आज़ादी की झंडी उड़ानी पड़ेगी ॥
करेंगे हम आज़ाद भारत को अपने।
विदेशी हुकूमत मिटानी पड़ेगी ॥

ग़ज़ल।

थे हम भी कभी जाँबाज़ वतन ऐ चर्ख़ ! हमें बरबाद न कर
ज़िंदा हैं मगर यह जीस्त नहीं अब और सितम ईजाद न कर

जर और जवाहर सारा लुटा सब शान गई नादार बने ।
फैशन पै लुटाते मुल्क का ज़र नाशाद को क्यों तू शाद न कर ॥
जब गांधी जी ने ज़ोर दिया जेलों के उधर दरवाजे खुले ।
हम आहोबुका से काम जो लें देते हैं डपट फरयाद न कर ॥
गोल मेज का तोफा दिया जो हमें नादान खुशी से उछलने लगे ।
क्या जाल बिछाया हिकमत का बातों में फकत आज़ाद न कर
काँग्रेस ने जो देखा रंग बुरा, दिया डंका बजा आज़ादी का ।
हे कृष्णमुरारी कर तू मदद, मजलूम को अब बेदाद न कर ॥

ग़ज़ल ।

जो करते हो मुझपर सितम देख लेना ।
अलम का नतीजा अलम देख लेना ॥
लगे बा मुकाबिल अगर गन मशीनें ।
अड़ा देंगे छाती को हम देख लेना ॥
अजी भूमि भारत के खातिर मरेंगे ।
हटेगा न पीछे क़दम देख लेना ॥
रहे माँग स्वाधीनता की बराबर ।
मेरे जब से है दम में दम देख लेना ॥
ठनी जो है दिल में ठनी ही रहेगी ।
अगर जाँय मुल्के अदम देख लेना ॥
अहिंसा न छोड़ेंगे ऐ मारकण्डे ।
मुझे तो है गंगा कसम देख लेना ॥

ग़ज़ल।

ज़ालिम तेरा दिल सह के सितम शाद करेंगे।
भारत को अपने हाथ से आबाद करेंगे॥
तेतिस करोड़ भाई मेरे अहले हिंद में।
दे दो स्वराज्य हिन्द का फरियाद करेंगे॥ १॥
गरचे सदा के साथ ही छूटे मशीन गन।
तो मर मिटेंगे हम न कुछ फसाद करेंगे॥ २॥
होता है बुरा जुल्मो सितम का भी नतीजा।
मालिक मेरा भगवान जो बेदाद करेंगे॥ ३॥
सह सह सितम उफ न जरा मुह से लायेंगे।
मजबूत अपने हिन्द का बुनियाद करेंगे॥ ४॥
ऐ मारकण्डे धन से इलम से जो हीन है।
बन के मुरीद गांधी को उस्ताद करेंगे॥ ५॥

ग़ज़ल।

देखना है किस क़दर दम खंजरे क़ातिल में है।
अबभी यह अरमान, यह हसरत, दिले बिस्मिल में है॥
गैर के आगे न पूछो, इसमें है इक खास राज।
फिर बता देंगे तुम्हें जो कुछ हमारे दिल में है॥
खींच कर लाई है सब को कत्ल होने की उमीद।
आशिकों का आज जमघट कूचए क़ातिल में है॥
फिरते हो क्यों हाथ में चारों तरफ खंजर लिए।
आज है यह क्या इरादा आज यह क्या दिल में है॥

एक से करता नहीं क्यों दूसरा कुछ बात चीत ।
देखता हूं मैं जिसे वह चुप तेरी महफिल में है ॥
उस पर आफत आयगी, इस रोज़ मर ही जायगा ।
वह तो दुनियां में नहीं जो कूचए क़ातिल में है ॥
एक जानिब है मसीहा एक जानिब है कजा ।
किस कशाकश में पड़ी है जान किस मुश्किल में है ॥
जख्म खाकर भी उसे है जख्म खाने की हवस ।
हौसला कितना तड़पने का तेरे बिस्मिल में है ॥

चेतावनी ।

जागो, हुआ सबेरा, गाँधी जगा रहा है ।
यह आत्म-बल-प्रवर्द्धक, शुभ-काल जा रहा है ॥
अन्याय की निशा से, अन्धेर से न डरना ।
सूरज-स्वराज्य अपनी लाली दिखा रहा है ॥
सुस्ती के विस्तरे से, फुरती से उठ खड़े हो ।
सब जग चुके तुम्हीं पर दारिद्र छा रहा है ॥
हो नौजवान तुमको, जग जाना चाहिये अब ।
सोने दो वृद्धजन को आलस्य आ रहा है ॥
यह दासता तो सुख का सपना है, भ्रमहै 'योगी' ।
स्वाधीनता के सुख का अवसर ये आ रहा है ॥

क़ौव्वाली ।

भारत क्यों करते बरबाद ताड़ी शराब पीने वाले ।
मुश्किल से जो दाम कमाते, उसको क्यों बेकार उड़ाते ।
क्यों नहीं बाल बच्चों में खाते, ताड़ी शराब पीने वाले ॥ १ ॥
इसी पैसे के कारन यार. बनो दूसरों का तावेदार ।
ज़रा दिल में तो करो विचार, ताड़ी शराब पीने वाले ॥ २ ॥
बुरी शै ताड़ी और शराब, नशे में सूझे कर्म खराब ।
बको गाली नहिं शर्म हेजाब, ताड़ी शराब पीने वाले ॥ ३ ॥
सरे में मारकण्डे ललकार, कहें मानों जी बात हमार ॥
ज़रा भारत तो लेव उबार, ताड़ी शराब पीने वाले ॥ ४ ॥

भारतीयों को संदेश ।

[१]

पतित हो जाते हैं उठता नहीं है सर गुलामी में ।
कि बन जाता है जीवन मौत से बदतर गुलामी में ॥
हज़ारों मिट गईं हैं जातियां फंसकर गुलामी में ।
है आता तर्स उनपर जो रहे हैं मर गुलामी में ॥
ज़माने में कहीं भी है नहीं इज्ज़त गुलामों की ।
जहां देखो वहीं पर हो रही दुर्गत गुलामों की ॥

[२]

अगर है ज़िन्दगी मंजूर तो आ जाओ मैदां में ।
हज़ारों वीर कड़ियां झेलते हैं आज मैदां में ॥

मिलाते हाँ रहे अब तक बहुत सरकार की हाँ में।
करो निज धर्म की रक्षा खलल आये न ईमाँ में॥
गुलामी का लगा सदियों से है यह रोग तो छूटे।
असहयोगी बनो अन्यायी से सहयोग तो छूटे॥

[३]

सहारा गैर का क्या देश का तो आसरा तुम हो।
सुखी हो कैसे माता जब गुलामों से सिवा तुम हो॥
गुलामी का मरज़ है वैद्य गांधी हैं दवा तुम हो।
करो साहस ज़माना देख ले तुमको कि तुम क्या हो॥
तुम्हारी मुक्ति की है मुक्त-पूर्वज गिन रहे घड़ियाँ।
लगाओ जोर सब मिलकर तड़ातड़ तोड़ दो कड़ियाँ॥

[४]

स्वयं सेवक बनो सच्चे समझ कर मर्म सेवा का।
न समझो खेल इसको है कठिन है धर्म सेवा का॥
पतित जनको उठाना है यही सत्कर्म सेवा का।
बढ़ाओ प्रेम अब बाज़ार कर दो गर्म सेवा का॥
बता हर एक को दो है विजय चर्खे में खद्दर में।
सुना दो राष्ट्र के स्वातन्त्र्य का संदेश घर घर में॥

[५]

विदेशी वस्त्र मत रक्खो गुलामी की निशानी है।
अगर गैरत है कुछ तुम में अगर कुछ तुम में पानी है॥

तुम्हें खद्दर चिकन है आमदानी कामदानी है।
किसी सूरत से नय्या पार भारत की लगानी है॥
समय है वीरता का बुज़दिली का राग जो छेड़ा।
नहीं फिर बच सकोगे है पड़ा मंझधार में बेड़ा॥

[६]

विदेशी वस्त्र का जो स्वार्थवश व्यापार करते हैं।
वो अपने हाथ अपने देश का संहार करते हैं॥
बने मीठी छुरी हैं मातृभू पर वार करते हैं।
दग़ा करते हैं अपने साथ पापाचार करते हैं॥
स्वयं छल जायँगे छलिया जलेगा इनको छल इनका
बंधी हैं पाप की गांठें मिलेगा इनको फल इनका॥

[७]

अदालत जाना तुम यक जानका जंजाल ही समझो।
बिछाया है वहां पर जाल का तो जाल ही समझो॥
गढ़ी जाती हैं बातें झूठ की टकसाल ही समझो।
वकीलों अहलकारों को दुखी का काल ही समझो॥
ग़रीबों के टकों से जेब अपना गर्म करते हैं।
नहीं यह सोचते दिल में कि हम क्या कर्म करते हैं॥

[८]

वकालत के बिना क्या पेट अपना भर नहीं सकते।
न हो जो नौकरी तो फिर चला क्या घर नहीं सकते॥
मलिन अन्तःकरण है पाप से ये डर नहीं सकते।

दया जो देश से करते हैं वह क्या कर नहीं सकते॥
जमाना है किधर वह हैं किधर यह तो परख देखें।
हृदय कहता है क्या उनका हृदय पर हाथ रख देखें॥

[९]

गरज यह है कि है अवसर कठिन संग्राम का आया।
बहुत सोये जवानो वक्त है अब काम का आया॥
उठो बाँधो कमर बीड़ा तुम्हारे नाम का आया।
अगर मन में तुम्हारे मोह कुछ धन धाम का आया॥
उसे ममता समझ कर ब्रत न अपना भंग होने दो।
विजय होगी तुम्हारी धर्म की यह जंग होने दो॥

[१०]

पड़ी हों हतकड़ी बेड़ी पड़ा हो तौक गर्दन में।
छिड़ी हो तान आज़ादी की जंजीरों की झनझन में॥
खड़े हो तान कर सीना निडर गोलों की सनसन में।
न आये मैल तेवर पर न शंका हो कभी मन में॥
बली सत्यग्रही का बाल बाँका कर नहीं सकते।
अमृत पुत्रो! अमर यश लो अमर हो मर नहीं सकते॥

'त्रिशूल'

चरखा।

ग़ज़ल

तुमने दिन रात अगर काम किया चरखे से।
फतह दुश्मन से दिलायेगा खुदा चरखे से॥

करके बरबाद हमें गैर जो आज़ाद हुए ।
आया उनके तईं पैग़ाम कज़ा चरखे से ॥
पास तलवार नहीं अपने नहीं गम इसका ।
हम मिटा देंगे सितमगर की जफ़ा चरखे से ॥
मालवी गाँधी मोती व जवाहर प्यारे ।
कह रहे हैं कि करो ज़ुल्म फ़ना चरखे से ॥
दरदे पंजाब वाले और खिलाफ़त की भी ।
कोई दुनियां में नहीं बढ़के दवा चरखे से ॥

देश-भक्त महिला की गर्जना ।

❋ ग़ज़ल दादरा ❋

देश भक्ती का बीड़ा चबाऊंगी मैं ।
देर बहनों न नेक लगाऊंगी मैं ॥
शेर—घर २ नगर २ में ग्राम २ में फिर कर ।
गांधी का संदेशा मैं सुनाउंगी हो निडर ॥
वस्त्र सारे विदेशी जलाऊंगी मैं ॥ देर०
शेर—रञ्जिश का पहले खूब लगाऊंगी मैं पता ।
फिर हिन्दू मुस्लिमों में कराऊंगी एकता ॥
भेद भाव कुभाव नशाऊंगी मैं ॥ देर०
शेर—छोटी बड़ी समस्त जातियों को मिलाकर ।
झगड़ा सदाके वास्ते आपस के भुलाकर ॥
छुआ छूत काभूत भुलाऊँगी मैं ॥ देर०

शेर—भारत की नारियों में अविद्या का राज है।
इससे ही दुखी देश औ सारी समाज है॥
विद्या पढ़ने के सीख सिखाऊंगी मैं॥ टेर०
शेर—नारी सुधार होने में जितनी ही देर है।
प्यारे स्वराज्य होने में उतनी ही बेर है॥
पाठ बहनों को यही पढ़ाऊंगी मैं॥ टेर०
शेर—सच्ची पतिव्रतायें जब मैदाँ में आयेंगी।
दुष्टों की सारी दुष्टता पल में नशायेंगी॥
चाल बाजों की चाल भुलाऊंगी मैं॥ टेर०
शेर—भारत की देवियों ने है जब २ समर किया।
भारी से भारी शत्रु का सर काट धर दिया॥
न्यायकारी का हुक्म बजाऊंगी मैं॥ टेर०
शेर—गर मर्द ओढ़ ओढ़नी सारी को पहन कर।
बैठेंगे घर के कोने में नारी का रूप धर॥
तो भी छक्के उड़ू के छुटाऊंगी मैं॥ टेर०
शेर—कहते "विमल" ये मित्रवर कविता प्रचंड की।
जड़ टूट जाय कूट नीति के घमण्ड की॥
कर में झण्डा तिरंगा उठाऊंगी मैं। टेर०

———:*:———

इन गांधी टोपी वालों ने।

इक लहर मचा दी भारत में इन गाँधी टोपी वालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया इन गाँधी टोपी वालों ने॥

सदियों की गुलामी में फँसकर, अपने को भी जो भूले थे।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गाँधी टोपी वालों ने॥
सर्बस्व देश-हित कर दो तुम, अर्पण सुपूत हो माता के।
सर्बस्व त्याग का मंत्र दिया, इन गाँधी टोपी वालों ने॥
अनहित में भारत माता के, जो लगे देश द्रोही बनकर।
उनको सत पथ पर चला दिया, इन गाँधी टोपी वालों ने॥
पट बंद हुये कितने मिल के, लंकाशायर भी चीख उठा।
चरखे सा चक्र चलाया जब, इन गाँधी टोपी वालों ने॥
रोते हैं विदेशी ब्यापारी, अपना सर धुन बिललाते हैं।
खादी से प्रेम किया जब से, इन गाँधी टोपी वालों ने॥
आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनों के प्राण पियारे हैं।
नेता गाँधी को बना लिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
"अब मेल करो आपस में तुम, जंजीर गुलामी की तोड़ो।
माना गाँधी का कहना यह, इन गांधी टोपी वालों ने॥
है बिकट समस्या 'तीस' की भी, उसको भी हल करना होगा।
जरिया बस एक निकाल लिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
युवकों के हृदय दुलारे हैं, आँखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहर को राजा इन गाँधी टोपी वालों ने॥
खुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके, स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी टोपी वालों ने॥

श्रीविष्णुमित्र विद्यार्थी 'दग्ध'

चरखा ।

ग़ज़ल दादरा

टेक—गाँधी बाबा ने भारत जगाय दिया है।
हमें चरखे का मन्तर बताय दिया है॥
शैर—जब से घर-घर में ये चरखे का चलाना छूटा।
बस उसी रोज से भारत का नसीबा फूटा॥
आके परदेशियों ने खूब खसीटा लूटा।
धर्म छूटा सभी इन्सान का पौरुष टूटा॥
आँखों से पट्टी हटाकर गुलामी की,
मारग पुराना दिखाय दिया है॥ गांधी बाबा० १
शैर—कौन सा घर था जहां चरखे नहीं चलते थे,
लाखों मन सूत इन्हीं चरखों से निकलते थे।
महीन मोटे कपड़े हर तरह के बनते थे,
शुद्ध मजबूत थे सुख से उन्हें पहनते थे॥
विलायत से आके राज जमाके,
हाय! गोरोंने वह सुख नशाय दिया है। गाँधी बाबा०२
शैर—ब्याह शादी में था दहेज चरखे का चलन,
नारियां हिंदू मुसल्मान समझती थीं सगुन।
नेम से नित्य वे चरखे को चलाती थीं पुन,
सुख से भरपूर रहो, उससे निकलती थी धुन॥
धर्म से हमने कैसे विमुख हो,

पापों में मन को लगाय दिया है ॥ गाँधी० ३ ॥

शैर—विदेशी सारियाँ, करेप व अद्धी मलमल,
हिंद के लोग गिरे देख उन्हे मुहं के बल।
नारियां लाज से घूंघट न जो उठाती हैं,
पहन के उनको साफ नंगी नजर आती हैं॥

डूब मरो, तुम्हें लाज न आती,
पैसा व इज्जत गँवाय दिया है ॥ गाँधी बाबा० ४॥

शैर—कुछ अभी गौर करो हिंदू ओ मुसलमानो।
तलाक दे दो इन्हें, अपनी दशा पहचानो।
चलाओ चरखा, तजो शौक, वह दिन आयेगा.
स्वराज्य दौड़ कर क़दमों में सिर नवायेगा॥

सूत के धागे में सारी है ताकत,
"माधो" ने तुमको सुनाय दिया है ॥ गांधी० ५ ॥

ग़ज़ल स्वदेशी खादी।

इस धज से चलो अपने चरखे को चला दो।
लाखों ही मनों सूत का तुम ढेर लगा दो॥
खादी पै अपने तन मन धन को करो निसार।
जो वस्त्र विदेशी हों उन्हें शीघ्र जला दो॥
भारत के कोने-कोने में चरखे का कर प्रचार।
बेकार जो हों उनको भी यह कार बता दो॥
घर में हों वस्त्र देशी, कुल वस्तु स्वदेशी।

भारत से विदेशी का चलन पूरा मिटा दो॥
कश्मीरे, पापलैंन, गिरंटों की जगह तुम।
खादी को मँगा बच्चों के अब कोट सिला दो॥
शिक्षा दो उनको ऐसी स्वदेशी के हों व्रती।
बन जायँ कर्मयोगी, यही जाम पिला दो॥
तुम भूलना न मित्रो, गांधी के मन्त्र को।
"लेंगे स्वराज्य सूत से चरखे के" सुना दो॥
खादी को बीनो इस क़दर भारत में मिल सभी।
अभिमानी मील वालों के तुम छक्के छुटा दो
निज पूर्वजों के खूं का असर तुममें है अगर।
लाज़िम है कि खादी से प्रेम अपना दिखा दो॥
संग्राम शांतिमय यही करना पड़े "विमल"।
भारत में स्वदेशी ही का तुम सिक्का जमा दो॥

—:❀❀❀:—

सर्व प्रकार की पुस्तकों के मिलने का पताः--

लाला बाबूलाल बुकसेलर,

मन्दिर प्रयागनारायण—कानपुर।

मुद्रक—पं० रामेश्वरप्रसाद पाण्डेय द्वारा "सुरसरि"
प्रेस, चूड़ीमोहाल—कानपुर में मुद्रित।

सच्चा रोज़गार ।

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

प्यारे मित्रो लीजिये अब बेकार बैठने की व आवारह घूमने की कोई जरूरत नहीं है इस किताब को खरीदो और रोज़गार सीखो कौड़ियों के चुटकलों से अशर्फियाँ पैदा कर थोड़े ही दिनों में मालदार हो जाओ, इसमें हर तरह के नुस्खों के बनाने की पूरी पूरी तरकीबें लिखी हैं। जैसे भीमसेनी कपूर, रसकपूर, बीड़ी, सिगरट, अर्ककपूर, नमक सुलेमानी, सैंदुर, सोहागा, चपड़ा हींग, काला नमक, हरताल, सिंगरफ, कलाबत्तू सोने के वर्क, मोती पर जिला देना, काली, नीली, पीली, सुर्ख, रोशनाई, रोली, अबीर, गुलाल, हीरे की परख, मिस्सी की इलायची, बाल उड़ाने का साबुन, राँगे की कलई, शीशे की कलई, फूल की धातु, लेमू की स्याही, टाइप की स्याही, हर तरह की वार्निश, सिलेट, मोमबत्ती, गैस इत्यादि ११६ नुसखे छपवा कर प्रकाशित किये गये हैं। मूल्य प्रति पुस्तक १।) सवा रुपया।

सर्व प्रकार की पुस्तकों के मिलने का पता :—

लाला बाबूलाल बुकसेलर,

मन्दिर प्रयागनारायण—कानपुर।

पं० रामेश्वरप्रसाद पाण्डेय द्वारा, "सुरसरि" प्रेस, चूड़ीमोहाल कानपुर में मुद्रित।